अंतरा-शब्दशक्ति

गूँज हृदय की

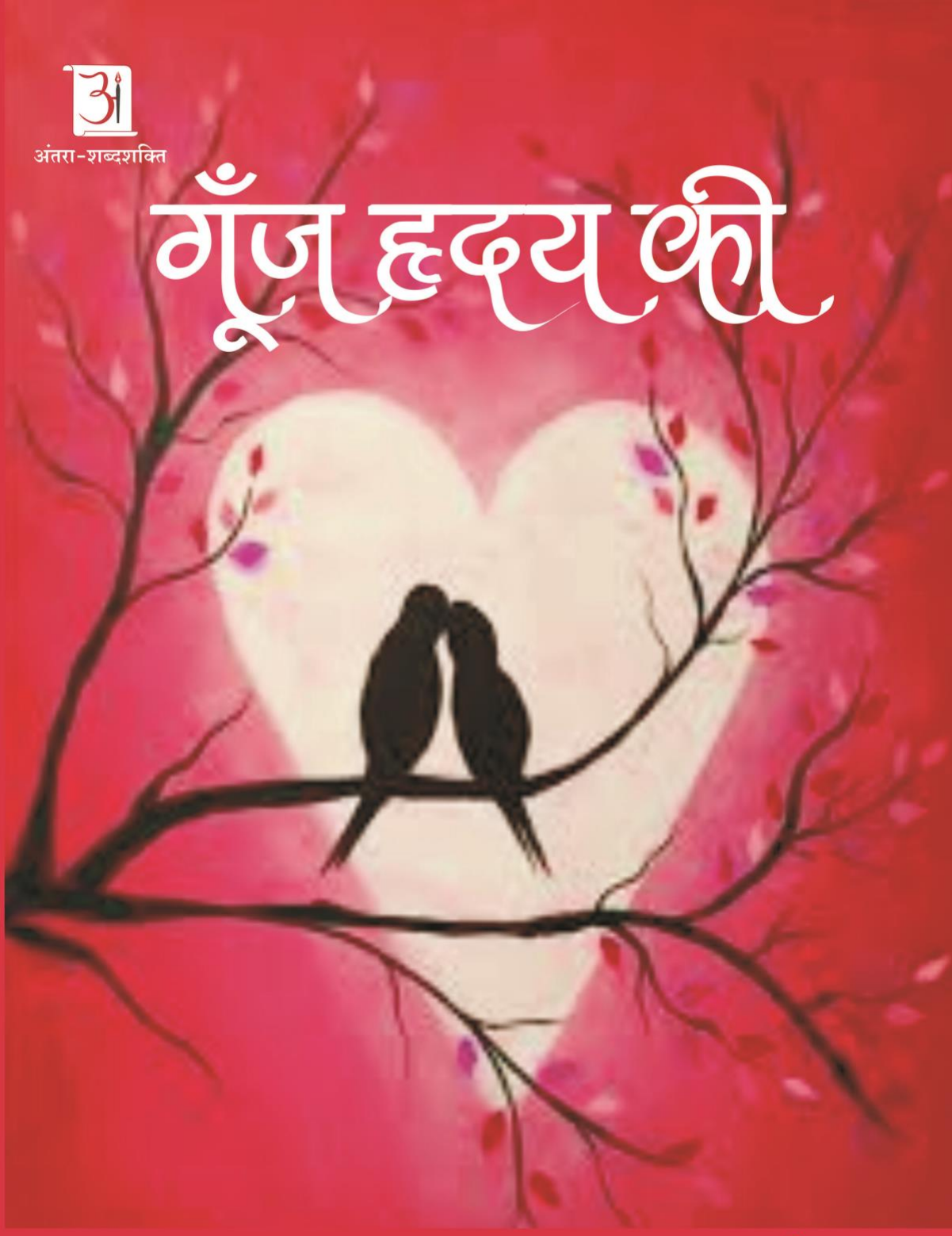

काव्य संग्रह

सीता गुप्ता

गूँज हृदय की

(काव्य संग्रह)

सीता गुप्ता

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-87-2

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
शाखा- एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१
दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshkti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८- सीता गुप्ता
मूल्य - ५५.०० रुपये
आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Goonj Hriday ki by Sita Gupta

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

मन की बात

ईश्वरीय अनुकंपा एवं सभी अपनों के प्यार व आशीष के फलस्वरूप ही आज मैं एक कलमकारा के रूप में अपने द्वितीय काव्य संग्रह "गूँज हृदय की "के साथ आपके समक्ष हूँ ।

इसके माध्यम से मेरा समाज को एक सकारात्मक दिशा देने का प्रयास है । जिससे लोग अपने विचारों व कार्यों में परिमार्जन कर, सुखमय ज़िन्दगी बिताते हुए, समाज की उन्नति में सहभागिता दे सकें ।

मेरी लेखनी में मेरी कर्मभूमि बैलाडीला के साथियों एवं विद्यार्थियों का विशेष योगदान रहा, जिनके साथ रहकर मुझे नए - नए विषय पर चिंतन व सृजन करने का अवसर मिला और मैं वहाँ हमेशा स्लोगन, कविताओं, भाषण में रुचि रख पुरस्कृत होती रही, आगे लेखन के इस सफ़र में मुझे अंतरा-शब्दशक्ति की असीम कृपा मिल गई, जिसने मुझे एक नई पहचान दे दी ।

सांसारिक जीवन में मेरे जीवन साथी श्री आर. के. गुप्ता जी हैं एवं मेरी झोली के दो फूल हर्ष व हितेश इंजीनियर हैं। साथ ही सुशील पुत्रवधुओं एवं दो पोतों सहित हमारे जीवन की सुंदर बगिया है। "मेरा परिवार मुझे हमेशा संबल देते हुए प्रोत्साहित कर मेरे कदमों को मजबूती देता है ।

इसीलिए आधी रात को भी अपनी कलम को प्रणाम करते हुए मैं उठते हुए विचारों एक नाम देकर दिल से सुकून पाती हूँ।" साथ ही ईश्वर को धन्यवाद देती हूँ, कि जिसने मुझे मेरी भांजी के

माध्यम से अंतरा-शब्दशक्ति परिवार की एक खुशनसीब सदस्या बना दिया, जिसके कारण आज मैं अपने हृदय की आवाज समाज तक पहुँचा पा रही हूँ।

अपना प्यार -स्नेह यूँ ही बनाए रखिएगा, जिससे लेखनी सहित मेरे जीवन को सार्थकता मिल सके।इसी अपेक्षा के साथ...

सीता गुप्ता दुर्ग छ. ग.

अनुक्रमणिका

1.	हृदय की गूँज	7
2.	आरजू	8
3.	परिपक्वता	9
4.	अनमोल जीवन	10
5.	ताकत	11
6.	शंखनाद	12
7.	जीवन के अर्थ	13
8.	निष्ठा	14
9.	अनोखे साथी	15
10.	रोटी एक किसान की	16
11.	संदेशा कोयल का	17
12.	सच्चे परोपकारी	18
13.	धानी चूनर	19
14.	जल का महत्व	20
15.	रीति	21
16.	नारी है तो सृष्टि है	22
17.	असर श्रद्धा का	23
18.	मातृ स्वरूपा नारी	24
19.	सांसारिक रथ	25

20. छलावा 26

21. सबक 27

22. बोले तितली 28

23. समानता 29

24. दरकार है अपनत्व की 30

25. कीमत पैसों की 31

26. अनुपम कृति 32

हृदय की गूँज

हृदय की गूँज पन्नों पर,
कलम से जब उतरती है
कभी सुख कीकभी दुख की,
सृजनतम रूप होती है।

किसी की आँख कापानी ,
किसी बेबश की लाचारी
किसी की शोख नजरों का,
बयांवो खूब करतीहै।

कभी कविता केअश्कोंमें
कभी कथा के सागर में
लगाकर डुबकियाँ देखो
वो चुनके मोती लातीहै।

तपिश हो सूर्य की या फिर ,
शीतलता चाँदनी आगे।
बहे गंगा कालिंदी संग,
वो वंशी धुन सुनाती है।

"हृदय की गूँज "पन्नों पर,
कलम से जब उतरती है
सृजनतम रूप से देखो,
"विधा"को जगमगातीहै।

आरजू

हवा के संग हौसलो के संग,
कब आसमान छू आउँ मैं ।
चिडिया सी उड़कर दूर गगन,
कब क्षितिज पार होआउँ मैं!

मीठा झरना बहती नदी,
सुंदर गगरी बन जाउँ मैं।
जगत की प्यास बुझाने को,
कब मीठी बूँद बन जाती मैं!

नन्हें कीआँखसपने देने,
मीठी लोरीबन जाउँ मैं।
किसी हाथ की लाठी बनकरके ,
कब सड़क पार ले जाउँ मैं!

किसी भूखे को रोटी देकर,
सुख की सौगात देआउँ मैं,
एक आस भरे दीपक की,
कब विश्वास की लौ बन जाउँ मैं!

इतनी चाहत "आरजू "मेरी,
बस ये सब कुछ कर जाउँ मैं,
ये साँस टूटने के पहले,
थोड़ा जी भर जी जाउँ मैं!

परिपक्वता

हो जाती हैं किवदंतियाँ झूठी....
किसी -किसी व्यक्तित्व पर जाकर ।
जिन्हें रहना आता है,
"कीचड़ में कमल जैसे।"

नहीं पड़ता कोई असर,
उन्हें जमाने की संगत का।
वो तो ठहरने नहीं देते स्व पर एक बूँद,
कमल पर पानी जैसे ।

मानता है लोहा तब जमाना उनका,
कि वो तो काँटों के बीच गुलाब हों जैसे।
सदियों से महकते नहीं देखा कभी शूलों को,
काँटों पे महकते देखा हरदम गुलाब के फूलों को ।

ऐसे ही कुछ व्यक्तित्व,
अनोखे होते हैं ।
जो खुद को,
जमाने में परिभाषित करते हैं ।

अनमोल जीवन

जीवन चला चली का खेला,
रह मत जाना कहीं अकेला।
अपनों का तू हाथ पकड़कर,
चट्टानों पर किस्मत लिख ले ।

छोड़ दे सब तू गोरख धंधे,
कुछ नेकी तू कर ले बंदे ।
लाभ नहीं हर सौदे देते,
हानि की कीमत को समझले ।

कल जो बुरा हुआ जीवन में,
उसे रेत -पानी पर लिख दे।
कल जो थोड़ा भला हुआ था,
उसे अपने मानस पर लिख ले ।

हाथों की तू रेख बदल ले,
अपनों से अपनत्व निभाले ।
एक अंगुली में नहीं है ताकत,
मुट्ठी बंद किस्मत को सजा ले ।

आज वक्त को पकड़ के मानव,
दुनियादारी आज समझ ले।
ये जीवन अनमोल रतन धन
इसकी साज -संवार तू कर ले।

ताकत

अपनी ताकत से ही चींटी,
पर्वत पर जा चढ़ती है।
इस दुनिया को सीख है देती,
एक मिसाल बन जाती है ।

अपनी ताकत से ही पंछी,
आसमान को छूता है ।
दूर क्षितिज से बातें करके,
कितना खुश वो होता है ।

अपनी ताकत से ही कोई,
गहरे सागर जाता है ।
सीप बंद मोती को लाकर,
दुनिया को पहनाता है ।

अपनी ताकत से ही मानुष,
मंजिल हासिल करता है ।
खुशियाँ उसके कदम चूमती,
इतिहास नए वो रचता है ।

"ताकत"के बल पर ही कलम तो,
सत्य उजागर करती है।
कथनी -करनी के अंतर को,
दुनिया को दिखलाती है ।

शंखनाद

धर्मराज के एक व्यसन से,
विपदा आई थी भारी।
खुद को जुआ में वो थे हारे ,
द्रोपदी खड़ी बेचारी।

नारी का अपमान देखकर,
दिग्गज रोए थे पल में।
उमा, रमा ब्रह्माणी जीभर,
रोईं थी उस क्षण में।

द्रुपद सुता की लाज बचाई ,
कृष्ण ने वहाँ पहुँचकर।
लेकिन,शंख फिर फूँक दिया था,
कुरूक्षेत्र में जाकर।

अपनों ने अपनों को मारा,
पर धर्मयुद्ध कहलाया।
स्वार्थ की दुनिया ने क्योंकि वहाँ,
स्वार्थ रूप दिखलाया।

खुद की सेना को मरवाकर,
कृष्ण नित्य ही रोए।
लेकिन धर्म की ध्वजा बचाने,
"कृष्ण ही शंख बजाए।"

जीवन के अर्थ

जीवन एक सच्चाई है,
जहाँ खटास संग मिठाई है।

जीवन एक ऐसी आस है,
जहाँ एहसास संग विश्वास है।

जीवन तो एक आकाश है ,
जहाँ अमावस संग पूर्ण चाँद है।

जीवन एक ऐसा बाग है ,
जहाँ काँटों संग गुलाब है।

जीवन एक ऐसा उपवन है,
जहाँ पतझड़ संग बहार है।

जीवन एक ऐसा घर भी है,
जहाँ दादा संग पोते भी हैं।

जीवन एक ऐसा सफर है,
जो विराम संग आरंभ भी है।

जीवन एक ऐसी नदी भी है,
जो अविरल देती गति है।

"जीवन "एक मीठी धारा है,
जिससे ये "जीवन "सारा है।

निष्ठा

निष्ठावान हुए जो जग में,
वही तो वंदित होते हैं।
निष्ठा दी थी गुरुओं को जब,
राम-कृष्ण अब पूजित हैं।

जिनकी कर्मों में निष्ठा थी,
वो ही वंदित होते हैं।
जैसे आजाद -भगतसिंह जी,
आज नमन के काबिल हैं।

दीन-दुखी को गले लगाया,
मदर टेरेसा ने देखो।
निष्ठा से ही से नाम कमाया,
विवेकानंद ने है देखो।

अटल बिहारी -अब्दुल कलाम ने,
निष्ठा से ही काम किया।
विश्व -पटल पर देखो उनको,
उनने अपना नाम किया ।

"निष्ठा "से जो कर्म हैं होते,
फलीभूत वो होते हैं।
इस समाज के उन्नयन में,
बटवृक्ष से बनते हैं।

अनोखे साथी

जिंदगी एक बहती हुई नदी,
और वे दोनों उसके दो किनारों से ।
साथ चलते रहे समर्पित होकर,
फिर भी कुछ अलग से ।

जुड़े रहे हमेशा मीठी लहरों से,
निभाते रहे जिंदगी के प्रत्येक वादे को ।
फिर भी कई बार,
अलग से खड़े रहे ।

जीवन के तूफानी झंझावातों ने,
खूब उथल पुथल मचाई उनके जीवन में ।
तब बाढ़ की नदी से वे भी,
कुछ देर अपने रूप को भूल गए ।

लेकिन..समय की बलवान ताकत ने,
उनके असली रूप को बिगड़ने न दिया ।
उनकी इंसानियत और मानवता ने,
उनके स्वरूप को बचाए रखा ।

इस तरह जिंदगी यूँही चलती रही,
एक नदी की तरह बढ़ती रही ।
जहाँ लहरों संग प्यार की गहराई थी,
यही उनके जीवन की सच्चाई थी ।

रोटी एक किसान की

वो पूनम के चंदा सी,
गोल -गोल रोटी।
वो नन्हें के हाथों में,
मीठी सी रोटी।

वो पटे पर गोल -गोल,
नाचती सी रोटी।
वो सबके घरों में,
सोंधी सी रोटी।

इस सारे जहाँ को,
लुभाती वो रोटी।
जो छिन जाए रोटी,
तो कट जाए बोटी।

पिछले सूखे में सिक पाई,
एक न रोटी।
अबकी बाढ़ ने बहा ली,
फिर मेरी रोटी।

इस जमाने को दी मैंने,
करोड़ों हैं रोटी।
पर मेरे लाल के हाथ में,
आज न रोटी।

संदेशा कोयल का

आमों की डाली पर आती,
शुभ संदेशा लेकर ।
कुहू -कुहू का गीत सुनाती,
सारी खुशियाँ देकर ।

जीवन में सुख -दुख दोनों हैं,
बात है वो समझाती।
पतझड़ बाद बसंत जो आता,
आमों बौरें छाती ।

उन बौरों के छाने पर ही,
डाल-डाल वो गाती ।
मीठा रस मीठा है मधुरस,
यही बात बतलाती ।

मीठे मन की मीठी बातें,
सीख भी मीठी देती ।
यही बात समझाती कोयल,
डाल -डाल पर गाती ।

बरस बाद आती जब कोयल,
गीत खुशी के गाती ।
जन -जन को संदेशा देकर,
फिर बिदाई लेती ।

सच्चे परोपकारी

खगवृदों की एक सभा में,
कितनी सुंदर बात हुई ।
हरियाली जो कम हो रही,
इस पर चर्चा खूब हुई ।

मसले का हल फिर यूँ निकला,
क्यूँ न श्रम का दान करें।
इस सृष्टि की खातिर हम भी,
कुछ तो अभयदान करें ।

उन खगवृदों ने मिलकर फिर,
बीज धरा पर बो दिए ।
देकर के स्नेह धरा ने,
बीज वोअंकुरित कर दिए।

हरियाली धरा पर छाई,
पौधे नए-नए पेड़ बने।
उन सुंदर पेड़ों पर फिर से,
खगवृदों के घर बने ।

सदियों से ये खगवृंद ही,
हरियाली को बचा रहे ।
पर्यावरण के संरक्षण में,
श्रमदान वो कर रहे ।

धानी चूनर

कजरारे बादल के छाते,
धरा पर खुशियाँ आती हैं
रिमझिम -रिमझिम बरखा रानी ,
देखो "बुनकर "बनतीं हैं।

हरियाली के धागों संग फिर,
"धानी चूनर "बुनतीं हैं।
जिसे ओढ़ ये प्रकृति देखो,
सुंदर दुल्हन बनती है।

अपनी चुनरी के आँचल से,
ममता खूब लुटातीं हैं।
सबकी क्षुधा मिटाने खातिर,
फसलें लहलहाती हैं।

बच्चे बूढ़े और युवा पर,
ममता खूब लुटाती हैं।
प्रकृति माँ एक ऐसी माँ जो,
प्यार सभी को करती है।

उसकी धानी -चूनर से ही,
खुशियाँ जगमगाती हैं।
उस धानी चूनर को देखो,
वर्षा रानी बुनतीं हैं।

जल का महत्व

जल से गगरी जल से नदियाँ,
जल से मीठी धार।

जल को आज ही आज बचालो,
बन करके इंसान।

जल न जाए कल ये जल कहीं,
करो सुरक्षित आज।

जल की है हर बूँद कीमती,
इसकी कीमत जान।

जल से खेती जल से बगिया,
जल से भोजन थाली।

जल जो बहा दिया सारा तो,
सब कुछ होगा खाली।

जल ही तो जीवन धारा है,
जल ही होंठ की लाली।

कल की पीढ़ी तभी बचेगी,
जब.. "जल"देगा खुशहाली।

रीति

नितदिन समय से आकर जग में,
दिनकर ने है रीति सिखाई ।
अनुशासन से काम करो सब,
इसमें ही तो लाख भलाई ।

जो पल बीत गया है जग में,
कभी नहीं वो आता है ।
जैसे पतझड़ में कोई भौंरा,
न कोई राग सुनाता है ।

सिंचित होते पेड़ सभी ही,
पर समय पर डालें फलती हैं ।
चिड़ियाँ उन पर घर बनाकर,
गुंजन रस्म निभाती हैं ।

फागुन चंदा जब मुस्काता,
होली संग में आती है ।
है "रीति "सदियों पुरानी,
रंगों से धरा सज जाती है ।

रीति रिवाज और रस्मों से ही,
जीवन का ताना -बाना है ।
चाहे प्रकृति हो या मानव,
रिश्ता बड़ा सुहाना है ।

नारी है तो सृष्टि है

सूर्य चमकता है तब जग में,
जब द्वार खोलती है नारी ।

चंदा भी मुस्काता नभ में,
जब दीप जलाती है नारी ।

पूजा की थाली तब सजती,
जब हाथ लगाती है नारी ।

रसोई से महक तब उठती,
जब भोग बनाती है नारी ।

घर आँगन सुरभि तब फैले,
जब पौध सींचती है नारी ।

घर में खुशियाँ आती हैं तब,
जब सम्मानित होती है नारी ।

नारी की महिमा को समझो,
शिव के साथ उमा प्यारी ।

राम की महिमा को तुम जानो,
सिया संग जोड़ी है न्यारी ।

राधे राधे तुम सब रटलो,
कृष्ण संग राधा प्यारी ।

नारी से ही सृष्टि सारी,
बिन नारी नहीं धरा सारी ।

असर श्रद्धा का

श्रद्धानत होकर पूजन कर,
तू देवों में विश्वास बना ।
श्रद्धानत होकर कर्म कर,
आशीषों में विश्वास जगा।

श्रद्धानत होते पेड़ सभी,
जो फल-फल के झुक जाते हैं ।
फिर बच्चे क्या और बूढ़े क्या,
सबको ही गले लगाते हैं

श्रद्धानत होने से सब ही,
आशीष घनेरी पाते हैं ।
इन आशीषों की छाँव तले,
वो सारी खुशियाँ पाते हैं ।

खुशियों को पाकर फिर वो तो,
सद्कर्म को आगे करते हैं ।
इस दुनिया के पथ पर वो तो,
फिर कदमों निशां बनाते हैं ।

है श्रद्धा का ये फलित भाव,
जो पूर्ण कार्य हो जाते हैं ।
फिर घर-आँगन और दिल में भी,
हर जगह खुशी वो पाते हैं ।

मातृ स्वरूपा नारी

मातृत्व रूप में नारी तुम,
ममता का आँचल लिए खड़ी ।

हर डगर -डगर और सफर -सफर,
बरगद के जैसी छाँव बनी ।

गोदी के फूलों की खातिर,
कभी दृढ़ निश्चय चट्टान बनी ।

कभी मीठी लोरी बनकर के,
तुम मोम के जैसे पिघल गईं ।

अपनी ममता की खातिर तुम,
कभी खून के आँसू पी गईं ।

कभी मौत से भी टकराकर के,
ममता के लिए तुम जी गईं ।

इस "मातृस्वरूप "को भगवन भी,
इसीलिए तो करते हैं प्रणाम ।

इस रूप को जो भी नमन करे,
इस जग में वह सच्चा वह इंसान ।

सांसारिक रथ

यदि नारी त्याग की मूरत है,
तो पुरुष संघर्ष की सूरत है।
सांसारिक जीवन मंदिर को,
दोनों मूरत की जरूरत है।

नारी परिवार की धुरी है,
तो पुरुष दौड़ता पहिया है।
उसकी ही सारी मेहनत से,
परिवार की रौनक बढ़ियाँ ँ है।

नारी तो दुख में रो लेती,
पर पुरुष मौन हो जाता है।
अपनों से अपनत्व न मिले तो,
खून के आँसू पीता है।

नारी है पिघलती मोम सही,
पर पुरुष फौलादी होता है।
अपने इसी व्यक्तित्व से,
फिर मान सही वह पाता है।

इस तरह सांसारिक रथ के यूँ ,
नर -नारी पहिए होते हैं।
पर दोनों का ही मान रहे,
तब सपने पूरे होते हैं।

छलावा

ज्योंहि मंदिर और गिरजा की घंटी बजी,
कुछ भूखों के हांथो को रोटी मिली ।

कल जो दुत्कारे गए थे बिना कुछ किए,
आज बिन माँगे उनको कुछ मोती मिले ।

है रहीसों की दुनिया बड़ी ही गजब,
जो मनाती है खुशियाँ बड़ी ही बेढब ।

एक दिखावा कई बार चढ़ावा बना,
तब बहुत बेघरों को आशियाना मिला ।

चलो अच्छा है कुछ अपराधी बचे,
एक बड़े ही संपोले से नेवले बचे ।

लेकिन आज और कल में है अंतर बड़ा,
हर दिन न होगा यहाँ कोई खड़ा ।

कल गिड़गिड़ाता हुआ फिर कोई होगा,
जो भूख और गरीबी की मूरत होगा ।

हर दिन "शादियाँ -जन्मदिन "होते नहीं,
तब "रहीसों के नोट "यूँ ही बँटते नहीं ।

रहा महलों और झोपड़ी में अंतर सदा,
जो राजा और रंक की परिभाषा बना ।

सबक

रिश्वत और भ्रष्टाचार को,
और मत बढ़ाओ!
दीन -दुखी और लाचारों के,
अभिशाप को मत पाओ ।

देर रात तुम बाहर रहकर,
व्यभिचार मत बढ़ाओ ।
रात अंधेरे गलत कर्म से,
कोहरे को मत छाओ।

किसी मासूम और अबला को तुम,
मत यूँ आज सताओ।
मानव धर्म से कर्म करो,
वरना सजा तुम पाओ ।

देर नहीं करती है कभी भी,
नियति सजा देने में ।
बेआवाज की लाठी से तब,
सही वार करने में ।

तब फिर तुमको वक्त न होगा,
न कोई साथी होगा ।
जो ममता के आँचल को तू!
दागी यूँ करेगा ।

बोले तितली

रंग बिरंगी तितली आई,
दो पंखों के साथ ।
दो पैरों के मानुष से,
करने लगी वो बात ।

हाथ -पैर के होते हुए भी,
मानुष क्यों उदास ।
अपने "कर" से वश में करले,
आज भाग्य को साथ ।

किस्मत को मत कोस रे मानुष!
आलस को तो त्याग ।
इस धरा पर आया है तो,
समय पर तू! जाग ।

श्रम की बूँदे आज बहाले,
खुशियाँ होंगी पास ।
तेरी मंजिल तुझे मिलेगी,
इसी समय तू जाग!

कुदरत की पहचान तू कर ले,
किस्मत को पहचान ।
फूल -फूल की खुशबू जैसे,
मैंने ली पहचान ।

समानता

नहीं देखता सूर्य जगत में,
किसका आँगन बड़ा या छोटा ।
वो बराबर सबके घर में,
सुंदर अपनी धूप है देता ।

नदियाँ सबकी प्यास बुझाती,
जो समीप है उनके आता ।
वो तो सबको नीर ही देतीं,
चाहे बूढ़ा हो या बच्चा ।

लेकिन.. इंसा फर्क है करता,
नए -नए समीकरण को गढ़के ।
अपने रिश्ते खूब बदलता,
इंसा -इंसा में फर्क करके ।
कभी -कभी वो सोच न पाता,
नादानी को गले लगाके ।
अपनी ही घुन में वो रहता,
नई नई परिभाषाओं को रचके ।

लेकिन ठोकर खाकर फिर वो,
मानवता से हांथ बढ़ाता ।
सही दिशा में कर्म करके,
ईश कृपा को समझ वो पाता ।

दरकार है अपनत्व की

बहना जो द्वारे दस्तक दे,
तो सारी खुशियाँ आती हैं।

जो भाई -भाई के काम आए ,
तो ताकत बढ़ती जाती है।

जो बहना भाई से प्यार करे,
तो समृद्धि संग आती है।

जो भाई बहन का मान रखे,
तो किस्मत रंग दिखलाती है।

जो मात -पिता की सेवा हो,
तो धूप छाँव बन जाती है।

जो चिड़ियों को दाना मिले,
तो दूर मुसीबत होती है।

जब मिलजुलकर सब रहते हैं,
तो बात अनोखी होती है।

मानव -मानव के संग में फिर,
मानवता मान बढ़ाती है।

इस धरा के आँगन में फिर तब,
हर रोज दिवाली होती है।

कीमत पैसों की

रुपया पैसा ही धन-दौलत,
इससे ही तो महल खजाना।
पर जो फिसल गया मुठ्ठी से,
मुँह को मिले तब एक न दाना।

इससे ही तो बढ़े अमीरी,
कोई भोगे बड़ी गरीबी।
इंसा की तकदीर भी इससे,
राजा -रंक और देख फकीरी।

इज्जत शोहरत सब है इससे,
मान अपमान भी आज इसी से।
इसको पाकर बने बादशाह,
खुद बन गए कभी शहंशाह।

पर उपकार न किया जो इससे,
तब न होगे स्थिर इससे।
ये तो चंचला ही कहलाती,
सबक जोर का वो दे जाती।

वर्तमान इतिहास है लिखता,
जो पैसे की इज्ज़त करता।
सरस्वती संग लक्ष्मी पूजकर,
वो समाज में नाम कमाता।

अनुपम कृति

सृष्टि की तुम अनुपम कृति हो,
मानव देह के प्राणी ।
सद् विचार को संग में रखकर,
बोलो मीठी वाणी ।

कितना सुंदर रूप तुम्हारा,
खुद देखो तुम नारी!
"तन"से मत दो तुम! विज्ञापन,
छबि होगी तब प्यारी ।

कुंदन जैसा "बदन "तुम्हारा,
करना खुद रखवाली ।
वक्त जरूरत जो आ जाए,
बनना चंडी -काली ।

इस शरीर से तुम सब मानव,
पर उपकार को कर लो ।
इंसानियत और मानवता का,
दृढ़ संकल्प तुम ले लो ।

यह तन तो मिट्टी की काया,
मिट्टी में ही जाना ।
आत्मा से ही है परमात्मा,
देते सीख सयाना ।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - श्रीमती सीता गुप्ता
माता - श्रीमती त्रिवेणी सरावगी
पिता - स्व.श्री ललता प्रसाद सरावगी
जन्म - 25.05.1957, जबलपुर (मध्यप्रदेश)
शिक्षा - एम.ए. (हिन्दी), एम.ए. (समाजशास्त्र), बी.एड.
पता - सीता गुप्ता, सी/ओ. आर.के.गुप्ता, जिप्सी-1, गणपति विहार, पोटिया कला रोड 'दुर्ग', जिला- दुर्ग (छ.ग.)
मो.नं. - 08839445051
ई मेल - sitarkgupta@gmail.com
विधा - काव्य लेखन
कार्यक्षेत्र - सेवा निवृत्त वरिष्ठ शिक्षिका एन.एम.डी.सी. लिमिटेड (बी.आई.ओ.पी.सी. से. स्कूल), किरन्दुल (छ.ग.)
प्रकाशन - ओस की बूँदे (काव्य संग्रह) अंतरा शब्द शक्ति प्रकाशन एन.एम.डी.सी. लिमि.- बैलाडीला, लौह अयस्क खान, किरन्दुल कॉम्प्लेक्स की 'सर्जना' पत्रिका में रचनाएं प्रकाशित, लक्ष्मी पब्लिकेशन की 'कुछ शिक्षक कवि-2' में रचना प्रकाशित एवं लोकजंग में रचना प्रकाशित हूई।
सम्मान - बैलाडीला क्षेत्र में इंटुक यूनियन द्वारा 'बेस्ट टीचर्स' अवार्ड एवं अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष 2016 के कार्यक्रम में बैलाडीला यूनियन एस.के.एम.एस. द्वारा विशेष सम्मान। वुमन अवार्ड 2018 सम्मान।
उपलब्धि - पर्यावरण स्लोगन, प्रथम पुरस्कार पुरस्कृत बोर्ड के नाम के साथ बैलाडीला में मुख्य सड़क के किनारे आज स्थापित है। - एक बूँद से सजता है, सीप में मोती।
उद्देश्य - समाज को प्रकृति बोध एवं वर्तमान परिवेश में सम-विषम परिस्थितियों के बीच विसंगतियों के कारण विचलित मानव मन को एक सकारात्मक सोच के साथ सहीं दिशा देने का प्रयास अपनी रचनाओं के माध्यम से कर रही हूँ।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-88102-87-2
मूल्य- 55/-